

भगत नामदेव – सबद ४४

जैसी भूखे प्रीति अनाज ॥

रागु भैरउ, भगत नामदेव, गुरु ग्रंथ साहिब, ११६४

जैसी भूखे प्रीति अनाज ॥

तृखावंत जल सेती काज ॥

जैसी मूड़ कुटंब पराइण ॥

ऐसी नामे प्रीति नराइण ॥ १ ॥

नामे प्रीति नाराइण लागी ॥

सहज सुभाइ भइओ बैरागी ॥ १ ॥ रहाउ ॥

जैसी पर पुरखा रत नारी ॥

लोभी नरु धन का हितकारी ॥

कामी पुरख कामनी पिआरी ॥

ऐसी नामे प्रीति मुरारी ॥ २ ॥

साई प्रीति जि आपे लाए ॥

गुर परसादी दुबिधा जाए ॥

कबहु न तूटसि रहिआ समाइ ॥

नामे चितु लाइआ सचि नाइ ॥ ३ ॥

जैसी प्रीति बारिक अरु माता ॥

ऐसा हरि सेती मनु राता ॥

प्रणवै नामदेउ लागी प्रीति ॥

गोबिदु बसै हमारै चीति ॥ ४ ॥ १ ॥ ७ ॥

सार: इच्छाओं में ऐसा आकर्षक खिंचाव होता है जो हमारी चेतना को बाहर की ओर खींचता है जिससे हम अंतहीन खोज में लग जाते हैं और अकसर उस आंतरिक पूर्णता से दूर हो जाते हैं जो हमारे भीतर पहले से स्थित है। जब इस खिंचाव को परखा नहीं जाता तब हमारी इच्छाएं बिना सोचे-

समझे की गई तीव्र लालसाओं में बदल जाती हैं जिससे स्थायी संतोष दुर्लभ हो जाता है। किंतु, जब इच्छा को ज्ञान पाने और आंतरिक विकास के लिए भक्ति की दिशा दी जाती है तब यह विनाशकारी शक्ति नहीं रहती बल्कि वही ऊर्जा परिवर्तनकारी शक्ति बन जाती है। वास्तविक समझ इसमें है कि इच्छा हमें स्वयं में बाँधती है या जीवन को सचमुच सार्थकता और संतोष की ओर ले जाती है।

जैसी भूखे प्रीति अनाज ॥

जैसे भूखे इंसान को खाना पसंद होता है। यह बताता है कि अंतरात्मा उस ओर खिंचती है जिससे उसे संतुष्टि मिलती है।

तृखावंत जल सेती काज ॥

प्यास पानी पाने की कोशिश करती है। यह ज़ोर देता है कि अंतरात्मा का ध्यान उसको पाने पर होता है जो उसे जीवित रखता है।

जैसी मूड़ कुटुंब पराङ्ग ॥

जैसे कोई अज्ञानी व्यक्ति रिश्तों के मोह में बंधा होता है, वैसे ही यह पहचान के उस संकुचित दायरे को दिखाता है जो एकता की विशालता को सिर्फ 'मैं' और 'मेरा' तक सीमित कर देता है।

ऐसी नामे प्रीति नराङ्ग ॥ १॥

सर्वव्यापी सत्ता के प्रति नामदेव का प्रेम ऐसा ही है। यह बताता है कि आध्यात्मिकता के लिए भी उसी भाव की ज़रूरत होती है जो हम अक्सर सांसारिक मोह-माया के लिए रखते हैं, मगर इसे भीतर की ओर मोड़ना होता है, अस्तित्व के सार को समझने के लिए। (१)

नामे प्रीति नाराङ्ग लागी ॥

नामदेव कहते हैं कि उनकी भक्ति उस सर्वव्यापी ऊर्जा से जुड़ी है। यह अंतरात्मा के अस्तित्व के मूल सार से जुड़ने का प्रतीक है।

सहज सुभाइ भइओ बैरागी ॥ १॥ रहाउ ॥

सहजता को अपनाकर और अपने स्वाभाविक भाव को स्वीकार करके, इच्छा-रहित अवस्था प्राप्त होती है। यह आनंद और सत्य के साथ जीने की विकसित अवस्था को दर्शाता है जिसमें अस्तित्व की सच्चाई के साथ सहज सामंजस्य होता है। (१)(विराम)

जैसी पर पुरखा रत नारी ॥

ठीक वैसे ही, जैसे कोई व्यक्ति किसी दूसरे के साथी के प्रति गहन संबंध बना लेता है। यह बेलगाम इच्छा की उस प्रवृत्ति को दिखाता है जो सही-गलत की समझ पर भी हावी हो सकती है।

लोभी नरु धन का हितकारी ॥

लालची व्यक्ति भौतिक धन-दौलत के मोह में फँसा रहता है। यह बताता है कि मूल्यों और रिश्तों को नज़रअंदाज़ करके केवल एक ही वस्तु पर ध्यान केंद्रित करने से जीवन में ख़ालीपन आ सकता है।

कामी पुरख कामनी पिआरी ॥

कामुक व्यक्ति के लिए, बेलगाम इच्छा ही उसका प्रेम है। यह इच्छा के उस शक्तिशाली आकर्षण का प्रतीक है जो इंद्रियों के प्रभावशाली खिंचाव से पैदा होता है।

ऐसी नामे प्रीति मुरारी ॥ २॥

सर्वव्यापी शक्ति के प्रति नामदेव का प्रेम ऐसा ही है। यह बदली हुई सोच को दिखाता है जिसमें सत्य के लिए लालसा और एकता के लिए लोभ ही इच्छा के एकमात्र अच्छे रूप रह जाते हैं। (२)

साई प्रीति जि आपे लाए ॥

स्व-जन्मी व्यापक जागरूकता के लिए प्रेम, जो सब कुछ समेटे हुए है। यह ऐसी आंतरिक तैयारी का संकेत देता है जिससे बिना किसी बाहरी दबाव या मजबूरी के, स्वाभाविक रूप से भक्ति का भाव जागता है।

गुर परसादी दुबिधा जाए ॥

आध्यात्मिक समझ की कृपा से द्वैत और दुविधा दूर हो जाती है। इससे पता चलता है कि मन में संदेह जागरूकता में बाधा डालता है जबकि ज्ञान इस विभाजन को मिटा देता है।

कबहु न तूटसि रहिआ समाइ ॥

वह अटल और मग्न रहता है। यह एकता के साथ मज़बूत जुड़ाव को दर्शाता है जो अमूर्त विचार से विकसित होकर एकता का स्थायी सत्य बन जाता है।

नामे चितु लाइआ सचि नाइ ॥३॥

नामदेव ने अपनी अंतरात्मा को सत्य के चिंतन में समर्पित कर दिया है। यह समर्पण वास्तविकता पर आधारित सच्चाई पर ध्यान केंद्रित करता है, न कि किसी विचार को बस मानने या उसका सम्मान करने पर। (३)

जैसी प्रीति बारिक अरु माता ॥

जैसे बच्चे और माँ के बीच प्यार होता है। यह स्वाभाविक भरोसे और बंधन को बताता है जिसमें मन सुरक्षित महसूस करता है जिसके लिए न तो तर्क की ज़रूरत होती है और न ही इसे बताने की।

ऐसा हरि सेती मनु राता ॥

इस तरह, मन उस सर्वव्यापी तत्व से भर जाता है। यह एकता में पूरी तरह लीन होने को दिखाता है जो अंत में स्वाभाविक अवस्था में बदल जाता है।

प्रणवै नामदेउ लागी प्रीति ॥

नामदेव विनम्रता से कहते हैं कि प्रेम पा लिया गया है। यह घोषणा पुष्टि करती है कि साधक एकता को अपनाने की मंज़िल तक पहुँच गया है।

गोबिंदु बसै हमारै चीति ॥४॥१॥७॥

वह सर्वव्यापी एकता मेरे अंतर्मन में बसती है। यह सोच, अभिव्यक्ति और कर्म में एकता को अपनाने की ओर इशारा करता है। (४)(१)(७)

तत्त्व: भगत नामदेव सहज सुभाई की गहरी अवस्था पर ज़ोर देते हैं, यह जीवन जीने का ऐसा सहज तरीका है जिसमें जीवन अहं के बजाय वास्तविक आंतरिक सत्य से आगे बढ़ता है। इस अद्भुत अवस्था में, बिना किसी दिखावे के प्रमाणिकता स्पष्ट झलकती है, बिना किसी स्वार्थ के अच्छाई सहज रूप से बहती है और संघर्ष के बिना, शांति स्वाभिक रूप से उभरती है। जब विचार, शब्द और कर्म, बिना किसी द्वंद्व वाले विवेक के साथ एक-दूसरे से मेल खाते हैं तब हम सहज रूप से एकता का भाव अपना लेते हैं, ठीक वैसे ही जैसे हम सांस लेते हैं। इस अवस्था को अपनाने से स्वयं से और दूसरों से हमारा जुड़ाव गहरा होता है।

सबद व्याख्या विनइंदर कौर और अमरदीप सिंह

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com